بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-01.12.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

युद्ध की अवस्था में हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुन्दर आचरण।

तथा फ़लिस्तीन के निर्दोष पीड़ितों के लिए दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 01 दिसम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा युद्धों के संदर्भ में कुछ बयान करूँगा। आप स. के व्यक्तित्व के आयाम तथा आप स. का नैतिक आचरण इन अवस्थाओं में किस तरह हमारे सामने आता है, बदर के युद्ध के संदर्भ में हम देख चुके हैं कि किस प्रकार आप स. न बन्दियों को सुविधाएँ प्रदान कीं। बन्दी स्वयं कहते हैं कि आप स. के निर्देशानुसार सहाबी अपने खाने से अच्छा खाना हमें देते थे। फिर आप स. ने बड़ी आसान शर्तों पर उन क़ैदियों को रिहा कर दिया था। कुछ क़ैदियों का फ़िदिया (क़ैद से स्वतंत्र होने का बदला) केवल इतना था कि जिनको लिखना पढ़ना आता था, वे मुसलमानों को लिखना पढ़ना सिखा दें।

ये सब इस लिए था कि आप स. से किसी का निजि बैर नहीं था बल्कि अल्लाह तआला के दीन को मिटाने वालों के विरुद्ध लड़ाई थी। कुछ लोग दुशमन की ओर से लड़ने के लिए अपनी मजबूरियों के कारण शामिल होते थे तथा मुसलमानों से लड़ना नहीं चाहते थे। उनको आप स. ने अनेक सुविधाएँ उपलब्ध फ़रमाईं, कुछ उनमें से मुसलमान भी हो गए थे। आप स. ने युद्ध के नियम एवं सिद्धांत निश्चित फ़रमाए, सन्धियों एवं समझौतों का ध्यान भी रखा तथा इन बाता पर यथासम्भव सीमा तक अमल भी किया। आजकल की दुनिया की तरह नहीं कि नियम एवं सिद्धांत तो बहुतायत में बनाए हैं परन्तु अमल किसी पर नहीं, दोहरे स्तर हैं।

आप स. का जीवन क़ुर्आन करीम के आदेशों की अमली तफ़सीर थी जहाँ न्याय, अमन तथा इंसाफ़ की स्थापना के लिए मूल सिद्धांत बयान किए गए हैं। अल्लाह तआला एक स्थान पर फ़रमाता है कि- يٰۤاَيُّهَا

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के लिए दृढ़ता पूर्वक निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में गवाह बन जाओ तथा किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हे कदाचित इस बात क लिए तत्पर न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक्वा अथात ईश्प्रायणता के सर्वाधिक निकट है तथा अल्लाह से डरो। निःसन्देह अल्लाह उससे सदैव अवगत रहता है जो तुम करते हो। अतः आप स. का सुन्दर आचरण उस शिक्षा के प्रकाश में हर एक आयाम पर प्रभावी तथा उसके उच्चतम स्तर स्थापित करने वाला था।

आज ओहद के हवाले से कुछ बयान करूँगा। जैसा कि घटना क्रम साबित करते हैं कि यह लडाइ भी दुशमन ने अपनी शत्रुता की आग के कारण शुरु की थी तथा विवश होकर मुसलमानों को भी इस युद्ध के लिए निकलना पड़ा। यह युद्ध बदर की घटना के एक वर्ष बाद शव्वाल तीन हिजरी में शनिवार के दिन पेश आया।

इतिहासकारों तथा सीरत के लेखाकारों की इस बात पर सहमति है कि ओहद की लड़ाई शव्वाल तीन हिजरी में हुई थी। अपितु एक कथन चार हिजरी का भी है तथा अधिकतर सात तथा पन्द्रह शव्वाल का भी वर्णन किया जाता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने से जुम्अः के दिन असर की नमाज़ के बाद रवाना हुए तथा शनिवार के दिन सूर्य निकलने से पहले ओहद के मैदान में पहुंचे।

सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स. नामक पुस्तक में ओहद के युद्ध का समय हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. न 15 शव्वाल तीन हिजरी, 31 मार्च 624 ईसवी दिन शनिवार बयान किया है।

इस युद्ध का कारण यह हुआ कि जब बदर की लड़ाई में क़ुरैश को भयानक हार हुई तो क़ुरैश के अग्रसर लोगों में से, जैसे अब्दुल्लाह बिन अबी रबीअः, इकरिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमय्या तथा दूसरे कुछ उत्सुक लोग अबू सुफ़यान के पास आए जिनका उस व्यापारिक दल में धन लगा हुआ था, जो बदर के युद्ध का कारण बना। यह धन मक्का में लाकर दारुन्नदवा में रख दिया गया था। उन्होंने अबू सुफ़यान को कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे लोगों का वध कर दिया है इस लिए इस व्यवसायिक धन के द्वारा उनके साथ युद्ध की तय्यारी करें, सम्भवतः हम अपने मृतकों का बदला ले सकें तथा कहा कि हम ख़ुशी से इस बात के लिए तय्यार हैं कि इस व्यवसाय के लाभ से एक सेना तय्यार की जाए। उसका सुझाव स्वीकार हुआ।

क़ुरैश ने माल में से 25 हज़ार का लाभ युद्ध के लिए अलग करके मूल धन उसके मालिकों को दे दिया।

इस एक सामान्य कारण के अतिरिक्त कुछ अन्य बातें भी थीं जो कि इस युद्ध के कारण कहे जा सकते हैं। बदर की लड़ाई के बाद मक्का वालों का शाम देश जाना कठिन हो गया था क्यूंकि मक्के के व्यापार का रास्ता मदीने के ग्रामीण क्षेत्र से होकर जाता था तथा क़ुरैश को अपने पूर्व अत्याचार तथा कष्टदायक गतिविधियों के कारण वहाँ से होकर जाना जटिल होता जा रहा था। युद्ध तथा सैन्य अभियानों में पराज्य,

बदर के युद्ध में क़ुरैश के मुख्याओं की हत्या तथा सत्तर मुशरिकों की गिरफ़तारी जैसी बातें उनकी मर्यादा तथा सामाजिक स्थिति पर काले धब्बे थे। वे बदला लेना चाहते थे ताकि उनकी साख को संभाला जा सके। एक लेखक ने एक कारण यह बयान किया है कि क़ुरैश को कुछ अभियानों में असफलता हुई तथा इसके कारण उनमें दुःख, पीड़ा एवं बदल की भावना अत्यधिक बढ़ गई थी। अतएव और भी अनेक कारण थे जिनके कारण क़ुरैश युद्ध की तय्यारी करते रहे। आस पास के क़बीलों को अपने साथ मिलाने के लिए किसी को लोभ तथा किसी को स्वाभिमान का बहाना बनाकर साथ मिला लिया।

हज़रत अब्बास रज़ी. की ओर से एक पत्र के द्वारा काफ़िरों की इन तय्यारियों की सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हो गई। दूसरी ओर यहूदियों तथा मुनाफ़िक़ों ने झूठी ख़बर फैला दी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई अच्छी ख़बर नहीं मिली। उन्होंने इस ख़बर को रंगीन बनाकर ख़ूब फैलाकर मुसलमानों को भयभीत करने का प्रयास किया जिसके कारण हर एक सावधान हो गया। शोर मचा हुआ था कि मक्का के मुशरिक युद्ध के लिए आ रहे हैं।

रमज़ान तीन हिजरी के अन्त अथवा शव्वाल के शुरु में मक्का के क़ुरैशियों की सेना निकली, जिनकी संख्या तीन हज़ार थी तथा जिनमें सात सौ सैनिक, दो सौ घोड़े तथा तीन हज़ार ऊँट थे। पन्द्रह महिलाएँ भी साथ थीं जिनमें अबू सुफ़यान, इकरिमा बिन अबू जहल, सफ़वान बिन उमय्या, ख़ालिद बिन वलीद तथा उमरू बिन अलआस की पतनियाँ भी शामिल थीं।

हज़रत अब्बास रज़ी. ने क़ुरैश की सेना से सम्बंधित सूचनाएँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपलब्ध कराईं तथा अमरू बिन सालिम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का क मुशरिकों के निकले की सूचना पहुंचाई जिसका अबू सुफ़यान को पता चला तो उसके होश उड़ गए। सफ़वान बिन उमय्या बोला कि हमारी संख्या अधिक है, युद्ध सामग्री अधिक है, हम उनके जान व माल की हानि करने में सक्ष्म हैं, जबकि वे इसका सामर्थ्य नहीं रखते।

अबू सुफ़यान की पतनी हिन्दा ने कहा कि तुम लोग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की माता जी की क़बर खोद डालो तथा हर एक व्यक्ति के फ़िदए में उनकी माता का एक एक अंग दे देना। क़ुरैश ने इससे मतभेद किया कि इस तरह वे हमारे मृतकों की क़बरें खोदे देंगे। इस दल की महिलाएँ बदले की भावना को उत्तेजित कर रही थीं तथा यह दल आगे बढ़ता रहा। दूसरी ओर मुसलमान तय्यारी में थे। सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो सहाबियों को क़ुरैश की सेना के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिए रवाना फ़रमाया तथा उस अवसर पर आप स. ने मुसलमानों की संख्या एवं शक्ति का आंकलन करने के लिए मदीना की पूरी मुस्लिम आबादी की जनगणना करवाई तो पता चला कि केवल पन्द्रह सौ मुसलमान लोग हैं।

उस समय की परिस्थितियों में इसको बड़ी संख्या समझा गया। कुछ सहाबियों ने ख़ुशी के जोश में यहाँ तक कह दिया कि क्या अब भी किसी का डर हो सकता है?

जब ओहद की लड़ाई के लिए गोष्ठि आयोजित हुई तो उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रात मैंने एक सपना देखा है कि एक गाय जो काटी जा रही है तथा अपनी तलवार अर्थात ज़ुलफ़क्क़ार नामक तलवार में दंदाना पड़ा देखा (अन्य रिवायतों में तलवार का दस्ता टूट जाने तथा दस्ते के पास दराड़ आने का वर्णन मिलता है) फिर मैंने देखा कि मैं एक मज़बूत कवच में हाथ डाल रहा हूँ। एक रिवायत में एक मज़बूत कवच पहने होने का वर्णन है, और मैं एक मेंढे पर सवार हूँ। आप स. ने इसका स्वप्नफल यह बयान फ़रमाया कि जहाँ तक गाय का सम्बंध है तो इससे यह संकेत है कि मेरे कुछ सहाबी शहीद होंगे, और जहाँ तक मेरी तलवार में दराड़ का विषय है तो इससे यह संकेत है कि मेरे घर वालों तथा वंश में से किसी व्यक्ति की हत्या होगी, तथा मज़बूत कवच का अर्थ मदीना है तथा मेंढे का मललब है कि मैं शत्रु के समर्थकों की हत्या करूँगा। अतएव आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात पर सुझाव मांगा तथा फ़रमाया कि यदि तुम्हारा मशवरा हो तो मदीने में रुको तथा महिलाओं एवं बच्चों को हम क़िलों में पहुंचा दें। मदीना एक क़िले की भांति था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो सुझाव दिया वही महामहिम मुहाजिरों तथा अन्सार का सुझाव था। परन्तु मुस्लिम युवाओं के एक दल ने जो बदर की लड़ाई में शामिल नहीं हुए थे अपनी शहादत से दीन की सेवा का सौभाग्य पाने के व्याकुल थे, अति अनुरोध किया कि आप हमें मदीने से बाहर लेकर चलें ताकि दुशमन हमें कायर न समझे।

आप स. ने युवाओं के सुझाव को मान लिया तथा निर्णय लिया कि हम खुले मैदान में निकल कर काफ़िरों का मुक़ाबला करेंगे और जुम्अः की नमाज़ के बाद आप स. ने मुसलमानों में सामान्य प्रेरण दी कि अल्लाह ही राह में जिहाद के उद्देश्य से इस यद्ध में शमिल होकर सवाब प्राप्त करें।

शेष विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

हुज़ूरे अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि फ़लिस्तीनियों के लिए दुआएँ करते रहें। युद्ध विराम के बाद फिर इन पर बिना किसी भदभाव कि कान सनिक ह आर कान नागरिक ह बम्बारी होगी और फिर निर्दोष शहीद होंगे, कितना अत्याचार होगा अल्लाह बेहतर जानता है। उनके भविष्य के बारे में महान शक्तियों के इरादे जो हैं, वे बड़े भयानक हैं, इस लिए अत्यधिक दुआओं की आवश्यकता है उनके लिए, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ
وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ
یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131